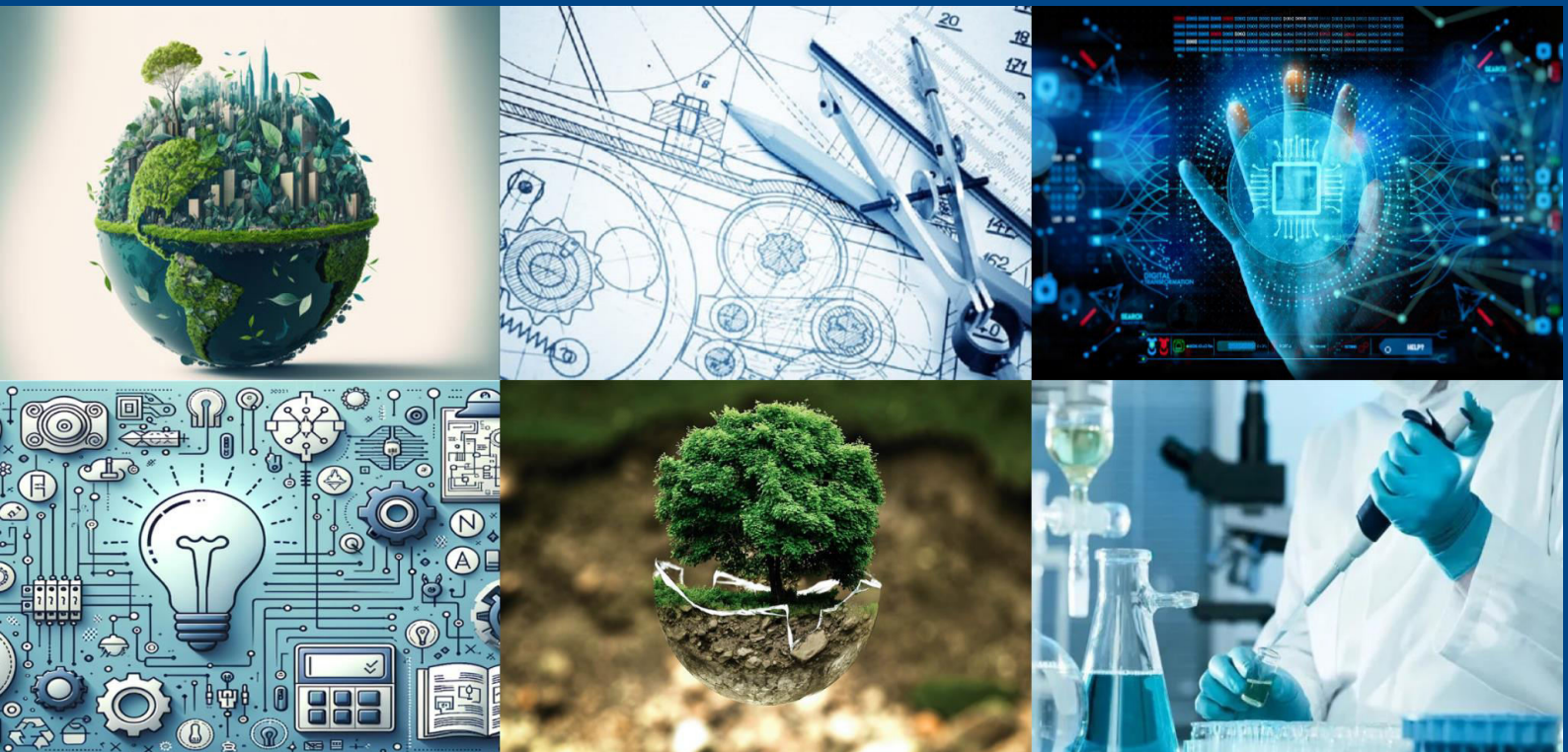




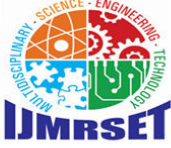
International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)



Impact Factor: 7.521

Volume 8, Issue 1, January 2025



International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

आधुनिक राजनीतिक चिंतन पर अरस्तु के विचारों का प्रभाव

Dr. Kan Raj Pooniya

Associate Professor, Dept. of Political Science, Government College Barmer, Rajasthan, India

सारांश: अरस्तु प्राचीन यूनान के महान दार्शनिक एवं राजनीतिक चिंतक थे, जिन्होंने राज्य, शासन, नागरिकता, न्याय तथा नैतिकता के संबंध में महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए। उनके विचारों ने न केवल तत्कालीन राजनीतिक व्यवस्था को प्रभावित किया, बल्कि आधुनिक राजनीतिक चिंतन की आधारशिला रखने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।

इस शोध में अरस्तु के प्रमुख राजनीतिक विचारों का अध्ययन करते हुए यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि आधुनिक लोकतंत्र, संवैधानिक शासन, नागरिक अधिकार, कानून की सर्वोच्चता तथा नैतिक राजनीति जैसी अवधारणाओं पर उनके विचारों का किस प्रकार प्रभाव पड़ा। अरस्तु ने राज्य को मानव जीवन की सर्वोच्च संस्था माना तथा नागरिकों के नैतिक एवं बौद्धिक विकास को राज्य का प्रमुख उद्देश्य बताया। उनके शासन वर्गीकरण तथा मध्यम वर्ग संबंधी विचार आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में विशेष रूप से प्रासंगिक दिखाई देते हैं।

यह शोध अरस्तु के विचारों की वर्तमान समय में उपयोगिता एवं प्रासंगिकता का भी विश्लेषण करता है। साथ ही, उनके विचारों की सीमाओं एवं आलोचनाओं का विवेचन करते हुए यह दर्शाया गया है कि आधुनिक राजनीतिक चिंतन में अरस्तु का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनके विचार आज भी राजनीतिक सिद्धांतों, शासन व्यवस्था तथा लोकतांत्रिक मूल्यों को समझने में सहायक सिद्ध होते हैं।

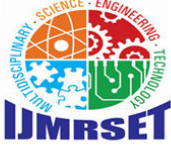
मुख्य शब्द: अरस्तु, राजनीतिक चिंतन, लोकतंत्र, राज्य, नागरिकता, न्याय, शासन व्यवस्था, नैतिक राजनीति, संवैधानिक शासन, आधुनिक राजनीति।

I. प्रस्तावना

राजनीति विज्ञान मानव समाज, राज्य, शासन तथा सत्ता से संबंधित अध्ययन का एक महत्वपूर्ण विषय है। प्राचीन काल से अनेक दार्शनिकों एवं विचारकों ने राजनीतिक जीवन को समझने तथा उसे व्यवस्थित करने का प्रयास किया। इन महान विचारकों में अरस्तु का नाम अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। अरस्तु ने राजनीति को केवल शासन प्राप्त करने का साधन न मानकर मानव जीवन को श्रेष्ठ एवं नैतिक बनाने का माध्यम माना। उनके विचारों ने प्राचीन यूनानी राजनीति के साथ-साथ आधुनिक राजनीतिक चिंतन को भी गहराई से प्रभावित किया।

अरस्तु का मानना था कि मनुष्य एक सामाजिक एवं राजनीतिक प्राणी है तथा राज्य का निर्माण मानव जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हुआ है। उन्होंने राज्य, नागरिकता, कानून, न्याय, शासन प्रणाली तथा नैतिकता के विषय में व्यापक विचार प्रस्तुत किए। उनके अनुसार राज्य का उद्देश्य केवल सुरक्षा प्रदान करना नहीं, बल्कि नागरिकों के नैतिक एवं बौद्धिक विकास को सुनिश्चित करना भी है। अरस्तु द्वारा प्रतिपादित शासन वर्गीकरण, कानून की सर्वोच्चता तथा मध्यम वर्ग की भूमिका संबंधी विचार आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में आज भी प्रासंगिक माने जाते हैं।

आधुनिक राजनीतिक चिंतन में लोकतंत्र, संवैधानिक शासन, नागरिक अधिकार, समानता तथा न्याय जैसे सिद्धांतों का विशेष महत्त्व है। इन सिद्धांतों के विकास में अरस्तु के विचारों का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। आधुनिक शासन व्यवस्थाएँ नागरिक सहभागिता, कानून आधारित शासन तथा नैतिक राजनीतिक मूल्यों पर बल देती हैं, जिनकी आधारभूमि अरस्तु के राजनीतिक दर्शन में मिलती है।



International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य आधुनिक राजनीतिक चिंतन पर अरस्तु के विचारों के प्रभाव का अध्ययन करना है। इस शोध के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया जाएगा कि अरस्तु के राजनीतिक सिद्धांतों ने आधुनिक राजनीतिक व्यवस्था एवं राजनीतिक विचारधाराओं को किस प्रकार प्रभावित किया। साथ ही, वर्तमान समय में उनके विचारों की उपयोगिता एवं प्रासंगिकता का भी विश्लेषण किया जाएगा।

इस प्रकार, अरस्तु के राजनीतिक विचार केवल प्राचीन युग तक सीमित नहीं हैं, बल्कि आधुनिक लोकतांत्रिक एवं संवैधानिक व्यवस्थाओं के विकास में भी उनका अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उनके विचार आज भी राजनीति विज्ञान के अध्ययन में मार्गदर्शक एवं प्रेरणादायक माने जाते हैं।

II. अरस्तु का जीवन एवं दार्शनिक पृष्ठभूमि

अरस्तु प्राचीन यूनान के महान दार्शनिक, चिंतक एवं राजनीति शास्त्री थे। उनका जन्म ईसा पूर्व ३८४ में यूनान के स्टागिरा नामक नगर में हुआ था। उनके पिता निकोमाखस मकदूनिया के राजा के राजवैद्य थे, जिसके कारण अरस्तु को प्रारम्भ से ही ज्ञान एवं विद्या का अनुकूल वातावरण प्राप्त हुआ। बाल्यकाल से ही उनमें अध्ययन एवं चिंतन की गहरी रुचि थी। आगे चलकर उन्होंने यूनान के प्रसिद्ध दार्शनिक प्लेटो के शिक्षालय में शिक्षा प्राप्त की और लगभग बीस वर्षों तक वहाँ अध्ययन एवं अध्यापन किया।

प्लेटो के प्रभाव से अरस्तु के चिंतन का विकास हुआ, किन्तु बाद में उन्होंने अपने स्वतंत्र विचार भी प्रस्तुत किए। जहाँ प्लेटो आदर्शवादी दृष्टिकोण पर अधिक बल देते थे, वहीं अरस्तु ने व्यावहारिक एवं यथार्थवादी दृष्टिकोण को महत्त्व दिया। अरस्तु का मानना था कि किसी भी राजनीतिक व्यवस्था का अध्ययन केवल कल्पना के आधार पर नहीं, बल्कि वास्तविक परिस्थितियों एवं अनुभवों के आधार पर होना चाहिए। यही कारण है कि उनके विचार अधिक व्यावहारिक एवं वैज्ञानिक माने जाते हैं।

अरस्तु के समय यूनान अनेक नगर-राज्यों में विभाजित था। इन नगर-राज्यों में राजनीतिक संघर्ष, शासन परिवर्तन तथा सामाजिक असमानता जैसी समस्याएँ विद्यमान थीं। उस समय लोकतंत्र, राजतंत्र तथा कुलीनतंत्र जैसी विभिन्न शासन व्यवस्थाएँ प्रचलित थीं। इन परिस्थितियों ने अरस्तु के राजनीतिक चिंतन को गहराई से प्रभावित किया। उन्होंने विभिन्न शासन व्यवस्थाओं का अध्ययन करके उनके गुण एवं दोषों का विश्लेषण किया।

अरस्तु ने ज्ञान के अनेक क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया, जिनमें राजनीति, नैतिकता, तर्कशास्त्र, जीवविज्ञान तथा दर्शन प्रमुख हैं। उनकी प्रसिद्ध कृति "राजनीति" राजनीति विज्ञान की एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक मानी जाती है। इस ग्रंथ में उन्होंने राज्य, नागरिकता, शासन प्रणाली तथा कानून के विषय में विस्तारपूर्वक विचार प्रस्तुत किए हैं।

अरस्तु का मानना था कि मनुष्य स्वभाव से सामाजिक एवं राजनीतिक प्राणी है। उनके अनुसार राज्य का निर्माण केवल जीवन रक्षा के लिए नहीं, बल्कि श्रेष्ठ एवं सुखी जीवन की प्राप्ति के लिए हुआ है। उन्होंने नैतिकता एवं राजनीति को परस्पर संबंधित माना तथा राज्य को नागरिकों के नैतिक विकास का माध्यम बताया।

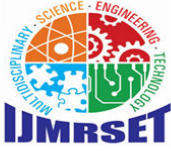
इस प्रकार, अरस्तु की दार्शनिक पृष्ठभूमि एवं उनके जीवन के अनुभवों ने उनके राजनीतिक चिंतन को गहराई एवं व्यापकता प्रदान की। उनके विचारों का प्रभाव आधुनिक राजनीतिक चिंतन पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

III. अरस्तु के प्रमुख राजनीतिक विचार

अरस्तु प्राचीन यूनान के ऐसे महान राजनीतिक चिंतक थे जिन्होंने राजनीति विज्ञान को व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किया। उनके राजनीतिक विचार अत्यंत व्यावहारिक, नैतिक तथा यथार्थवादी माने जाते हैं। उन्होंने राज्य, शासन, नागरिकता, न्याय तथा कानून के संबंध में अनेक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत प्रस्तुत किए, जिनका प्रभाव आधुनिक राजनीतिक चिंतन पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

राज्य की उत्पत्ति एवं स्वरूप

अरस्तु के अनुसार राज्य एक प्राकृतिक संस्था है। उनका मानना था कि मनुष्य स्वभाव से सामाजिक एवं राजनीतिक प्राणी है, इसलिए वह अकेले जीवन नहीं जी सकता। परिवार से ग्राम तथा ग्राम से राज्य का विकास हुआ। इस प्रकार राज्य का निर्माण मानव जीवन की



International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हुआ। अरस्तु ने राज्य को सर्वोच्च संस्था माना, क्योंकि यह मनुष्य को सुरक्षित, व्यवस्थित एवं श्रेष्ठ जीवन प्रदान करता है।

आदर्श राज्य की अवधारणा

अरस्तु ने आदर्श राज्य की कल्पना प्रस्तुत करते हुए कहा कि राज्य का उद्देश्य केवल शासन करना नहीं, बल्कि नागरिकों को नैतिक एवं सद्गुणी बनाना भी है। उनके अनुसार आदर्श राज्य वही है जहाँ कानून का शासन हो, न्याय की स्थापना हो तथा नागरिकों को समान अवसर प्राप्त हों। उन्होंने मध्यम वर्ग को राज्य की स्थिरता का आधार माना, क्योंकि मध्यम वर्ग अत्यधिक धन एवं अत्यधिक गरीबी दोनों से दूर रहता है।

नागरिकता संबंधी विचार

अरस्तु ने नागरिकता को अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना। उनके अनुसार नागरिक वही व्यक्ति है जिसे राज्य के शासन एवं न्याय प्रक्रिया में भाग लेने का अधिकार प्राप्त हो। उन्होंने नागरिकों के कर्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों पर विशेष बल दिया। अरस्तु का मानना था कि एक अच्छे राज्य का निर्माण अच्छे नागरिकों से ही संभव है।

शासन प्रणालियों का वर्गीकरण

अरस्तु ने शासन व्यवस्थाओं का विस्तृत अध्ययन करके उनका वर्गीकरण प्रस्तुत किया। उन्होंने शासन के शुद्ध एवं विकृत रूपों का वर्णन किया। उनके अनुसार राजतंत्र, कुलीनतंत्र तथा जनतंत्र शासन के शुद्ध रूप हैं, जबकि अत्याचारी शासन, धनिकतंत्र तथा भीड़तंत्र उनके विकृत रूप हैं। अरस्तु ने ऐसी शासन व्यवस्था का समर्थन किया जिसमें जनता के हितों की रक्षा हो तथा कानून की सर्वोच्चता बनी रहे।

न्याय एवं समानता संबंधी विचार

अरस्तु ने न्याय को राज्य का प्रमुख आधार माना। उनके अनुसार न्याय का अर्थ प्रत्येक व्यक्ति को उसके योग्य अधिकार एवं स्थान प्रदान करना है। उन्होंने समानता की अवधारणा को भी महत्त्व दिया, किन्तु उनका मानना था कि समानता का अर्थ सभी व्यक्तियों के साथ एक जैसा व्यवहार करना नहीं, बल्कि योग्यता एवं परिस्थितियों के अनुसार उचित व्यवहार करना है।

कानून का महत्त्व

अरस्तु ने कानून की सर्वोच्चता पर बल दिया। उनका मानना था कि कानून बुद्धि एवं विवेक पर आधारित होता है, इसलिए शासन व्यक्तियों की इच्छा के अनुसार नहीं, बल्कि कानून के अनुसार होना चाहिए। उन्होंने कहा कि जहाँ कानून का शासन होता है वहाँ न्याय एवं स्थिरता बनी रहती है।

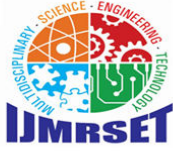
इस प्रकार, अरस्तु के राजनीतिक विचारों में राज्य, नागरिकता, न्याय, कानून तथा नैतिकता का गहरा संबंध दिखाई देता है। उनके विचार आधुनिक लोकतांत्रिक एवं संवैधानिक व्यवस्थाओं के लिए आज भी प्रेरणास्रोत माने जाते हैं।

आधुनिक राजनीतिक चिंतन की अवधारणा

आधुनिक राजनीतिक चिंतन से आशय उन राजनीतिक विचारों, सिद्धांतों एवं धारणाओं से है जिनका विकास आधुनिक युग में मानव समाज, राज्य, शासन तथा नागरिक जीवन की बदलती परिस्थितियों के अनुसार हुआ। यह चिंतन स्वतंत्रता, समानता, न्याय, लोकतंत्र, नागरिक अधिकार तथा कानून की सर्वोच्चता जैसे मूल्यों पर आधारित है। आधुनिक राजनीतिक चिंतन ने राजनीति को केवल सत्ता प्राप्ति का साधन न मानकर जनकल्याण एवं सामाजिक विकास का माध्यम माना है।

आधुनिक युग में विज्ञान, शिक्षा, औद्योगिक विकास तथा सामाजिक परिवर्तन के कारण राजनीतिक विचारों में भी व्यापक परिवर्तन आया। लोगों में अधिकारों एवं स्वतंत्रता के प्रति जागरूकता बढ़ी तथा शासन में जनभागीदारी को महत्त्व दिया जाने लगा। इसी कारण लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था तथा संवैधानिक शासन की अवधारणाएँ विकसित हुईं। आधुनिक राजनीतिक चिंतन का मुख्य उद्देश्य ऐसी शासन व्यवस्था की स्थापना करना है जिसमें नागरिकों के अधिकार सुरक्षित रहें तथा समाज में न्याय एवं समानता बनी रहे।

आधुनिक राजनीतिक चिंतन की एक प्रमुख विशेषता लोकतंत्र है। लोकतंत्र में जनता को शासन का आधार माना जाता है तथा नागरिकों को शासन में भाग लेने का अधिकार प्राप्त होता है। इसके साथ ही कानून की सर्वोच्चता, स्वतंत्र न्याय व्यवस्था तथा मौलिक अधिकारों



International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

की सुरक्षा को भी अत्यंत महत्त्व दिया जाता है। आधुनिक राजनीतिक व्यवस्था में राज्य को जनसेवा एवं जनकल्याण का साधन माना जाता है।

आधुनिक राजनीतिक चिंतन में नागरिकता की अवधारणा भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। नागरिक केवल राज्य का सदस्य नहीं होता, बल्कि उसे अनेक अधिकार एवं कर्तव्य प्राप्त होते हैं। नागरिकों की स्वतंत्रता, समान अवसर तथा सामाजिक न्याय आधुनिक राजनीतिक व्यवस्था के प्रमुख आधार हैं।

इसके अतिरिक्त आधुनिक राजनीतिक चिंतन में नैतिकता एवं उत्तरदायित्व को भी महत्त्व दिया गया है। शासन व्यवस्था से अपेक्षा की जाती है कि वह न्यायपूर्ण, पारदर्शी तथा उत्तरदायी हो। इसी कारण सुशासन, जनकल्याणकारी राज्य तथा मानवाधिकार जैसी अवधारणाएँ आधुनिक राजनीति का महत्त्वपूर्ण भाग बन चुकी हैं।

आधुनिक राजनीतिक चिंतन पर अनेक प्राचीन एवं आधुनिक विचारकों का प्रभाव रहा है। इनमें अरस्तु का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। राज्य, नागरिकता, न्याय, कानून तथा नैतिक राजनीति संबंधी उनके विचार आधुनिक लोकतांत्रिक एवं संवैधानिक व्यवस्थाओं में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।

इस प्रकार आधुनिक राजनीतिक चिंतन मानव अधिकारों, लोकतंत्र, न्याय तथा जनकल्याण पर आधारित एक व्यापक एवं विकसित राजनीतिक दृष्टिकोण है, जिसने आधुनिक समाज एवं शासन व्यवस्था को गहराई से प्रभावित किया है।

IV. आधुनिक राजनीतिक चिंतन पर अरस्तु के विचारों का प्रभाव

अरस्तु के राजनीतिक विचारों का प्रभाव आधुनिक राजनीतिक चिंतन पर अत्यंत गहरा एवं व्यापक रूप से दिखाई देता है। उन्होंने राज्य, कानून, न्याय, नागरिकता तथा शासन व्यवस्था के संबंध में जो सिद्धांत प्रस्तुत किए, वे आधुनिक लोकतांत्रिक एवं संवैधानिक व्यवस्थाओं के विकास में अत्यंत सहायक सिद्ध हुए। उनके विचारों ने राजनीति को नैतिकता एवं जनकल्याण से जोड़ने का कार्य किया।

लोकतंत्र पर प्रभाव

अरस्तु ने शासन व्यवस्था में जनता की भूमिका को महत्त्व दिया। यद्यपि उन्होंने प्रत्यक्ष लोकतंत्र की सीमाओं को स्वीकार किया, फिर भी उन्होंने ऐसी शासन व्यवस्था का समर्थन किया जिसमें जनता के हितों की रक्षा हो। आधुनिक लोकतंत्र में जनता की सहभागिता, जनमत का महत्त्व तथा समान राजनीतिक अधिकार जैसी अवधारणाओं में अरस्तु के विचारों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

संवैधानिक शासन पर प्रभाव

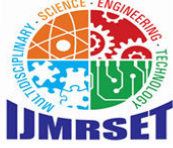
अरस्तु ने कानून की सर्वोच्चता पर विशेष बल दिया। उनका मानना था कि शासन व्यक्तियों की इच्छाओं के अनुसार नहीं, बल्कि कानून के अनुसार चलना चाहिए। आधुनिक संवैधानिक शासन की व्यवस्था भी इसी सिद्धांत पर आधारित है। वर्तमान लोकतांत्रिक राज्यों में संविधान एवं कानून को सर्वोच्च माना जाता है तथा सभी नागरिक एवं शासक उसके अधीन रहते हैं।

नागरिकता की आधुनिक अवधारणा पर प्रभाव

अरस्तु ने नागरिकता को केवल अधिकारों तक सीमित न रखकर कर्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों से भी जोड़ा। आधुनिक राजनीतिक चिंतन में भी नागरिकों के अधिकारों के साथ उनके कर्तव्यों पर बल दिया जाता है। शासन में भागीदारी, मतदान का अधिकार तथा सामाजिक उत्तरदायित्व जैसी अवधारणाएँ अरस्तु के विचारों से प्रभावित हैं।

न्याय एवं समानता संबंधी विचारों पर प्रभाव

अरस्तु ने न्याय को राज्य का मूल आधार माना। उनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को उसकी योग्यता एवं आवश्यकता के अनुसार अधिकार मिलना चाहिए। आधुनिक राजनीतिक चिंतन में सामाजिक न्याय, समान अवसर तथा विधिक समानता जैसी अवधारणाओं में उनके विचारों की झलक मिलती है। आधुनिक लोकतांत्रिक राज्य समाज के प्रत्येक वर्ग को न्याय एवं समान अवसर प्रदान करने का प्रयास करते हैं।



International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

नैतिक राजनीति की अवधारणा पर प्रभाव

अरस्तु का मानना था कि राजनीति का उद्देश्य केवल सत्ता प्राप्त करना नहीं, बल्कि नागरिकों का नैतिक एवं बौद्धिक विकास करना है। आधुनिक राजनीतिक चिंतन में भी नैतिक राजनीति, उत्तरदायी शासन तथा जनकल्याणकारी राज्य की अवधारणाएँ अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती हैं। शासन से अपेक्षा की जाती है कि वह नैतिक मूल्यों का पालन करे तथा जनता के हित में कार्य करे।

मध्यम वर्ग संबंधी विचारों का प्रभाव

अरस्तु ने मध्यम वर्ग को राज्य की स्थिरता का आधार माना। उनके अनुसार अत्यधिक अमीरी एवं गरीबी दोनों ही राजनीतिक अस्थिरता को जन्म देती हैं। आधुनिक राजनीतिक चिंतन में भी सामाजिक एवं आर्थिक संतुलन को महत्व दिया जाता है। अनेक आधुनिक राज्य मध्यम वर्ग को सशक्त बनाने तथा आर्थिक असमानता को कम करने का प्रयास करते हैं।

राज्य के उद्देश्य संबंधी विचारों पर प्रभाव

अरस्तु ने राज्य को जनकल्याण एवं श्रेष्ठ जीवन की प्राप्ति का साधन माना। आधुनिक जनकल्याणकारी राज्य की अवधारणा भी इसी विचार पर आधारित है। आज राज्य केवल सुरक्षा प्रदान करने तक सीमित नहीं है, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार तथा सामाजिक सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

इस प्रकार, आधुनिक राजनीतिक चिंतन के अनेक प्रमुख सिद्धांतों एवं व्यवस्थाओं में अरस्तु के विचारों का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। उनके राजनीतिक सिद्धांत आज भी लोकतंत्र, कानून, न्याय तथा जनकल्याणकारी शासन की समझ को विकसित करने में अत्यंत उपयोगी सिद्ध होते हैं।

v. अरस्तु के विचारों की समकालीन प्रासंगिकता

अरस्तु के राजनीतिक विचार प्राचीन काल में प्रस्तुत किए गए थे, किन्तु उनकी उपयोगिता एवं महत्व आज भी बना हुआ है। आधुनिक लोकतांत्रिक एवं संवैधानिक व्यवस्थाओं में उनके अनेक सिद्धांत प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देते हैं। राज्य, कानून, न्याय, नागरिकता तथा नैतिक राजनीति संबंधी उनके विचार वर्तमान समय की राजनीतिक व्यवस्था को समझने में अत्यंत सहायक सिद्ध होते हैं।

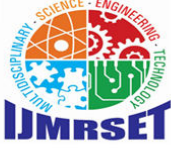
आज के लोकतांत्रिक युग में जनता की सहभागिता को अत्यधिक महत्व दिया जाता है। अरस्तु ने भी शासन व्यवस्था में नागरिकों की भूमिका को आवश्यक माना था। उनका मानना था कि एक अच्छा राज्य तभी संभव है जब उसके नागरिक जागरूक एवं उत्तरदायी हों। वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में मतदान, जनमत तथा नागरिक अधिकारों की जो महत्ता दिखाई देती है, उसमें अरस्तु के विचारों की प्रासंगिकता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

अरस्तु ने कानून की सर्वोच्चता पर बल दिया था। आधुनिक संवैधानिक शासन भी इसी सिद्धांत पर आधारित है। आज प्रत्येक लोकतांत्रिक राज्य में संविधान एवं कानून को सर्वोच्च माना जाता है तथा शासन व्यवस्था कानून के अनुसार संचालित होती है। कानून आधारित शासन से समाज में न्याय, शांति एवं स्थिरता बनी रहती है।

न्याय संबंधी अरस्तु के विचार भी वर्तमान समय में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। आधुनिक समाज में सामाजिक न्याय, समान अवसर तथा मानव अधिकारों की रक्षा को विशेष महत्व दिया जाता है। अरस्तु ने प्रत्येक व्यक्ति को उसकी योग्यता एवं आवश्यकता के अनुसार अधिकार देने की बात कही थी। यही सिद्धांत आज सामाजिक समानता एवं कल्याणकारी योजनाओं के रूप में दिखाई देता है।

अरस्तु ने राजनीति एवं नैतिकता के गहरे संबंध को स्वीकार किया था। वर्तमान समय में भी शासन से अपेक्षा की जाती है कि वह ईमानदारी, उत्तरदायित्व एवं नैतिक मूल्यों के आधार पर कार्य करे। भ्रष्टाचार, सत्ता का दुरुपयोग तथा राजनीतिक अनैतिकता जैसी समस्याओं के समाधान के लिए अरस्तु के नैतिक राजनीति संबंधी विचार आज भी अत्यंत उपयोगी माने जाते हैं।

उन्होंने मध्यम वर्ग को राज्य की स्थिरता का आधार माना था। वर्तमान समय में भी आर्थिक असमानता एवं सामाजिक विभाजन राजनीतिक अस्थिरता का कारण बनते हैं। इसलिए आधुनिक राज्य आर्थिक संतुलन स्थापित करने तथा मध्यम वर्ग को सशक्त बनाने का प्रयास करते हैं। यह विचार भी अरस्तु की दूरदर्शिता को स्पष्ट करता है।



International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

अरस्तु के विचार शिक्षा एवं नागरिक चेतना के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण हैं। उनका मानना था कि राज्य का उद्देश्य केवल सुरक्षा प्रदान करना नहीं, बल्कि नागरिकों का नैतिक एवं बौद्धिक विकास करना भी है। आज शिक्षा, सामाजिक जागरूकता तथा नागरिक उत्तरदायित्व को लोकतंत्र की सफलता के लिए आवश्यक माना जाता है।

इस प्रकार, अरस्तु के राजनीतिक विचार केवल ऐतिहासिक दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं हैं, बल्कि वर्तमान राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन में भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। उनके सिद्धांत आधुनिक लोकतंत्र, कानून आधारित शासन, सामाजिक न्याय तथा जनकल्याणकारी राज्य की अवधारणाओं को समझने में आज भी मार्गदर्शक सिद्ध होते हैं।

अरस्तु के विचारों की आलोचना

अरस्तु के राजनीतिक विचार राजनीति विज्ञान में अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं, किन्तु उनके सिद्धांतों की अनेक विद्वानों द्वारा आलोचना भी की गई है। यद्यपि उनके विचारों ने आधुनिक राजनीतिक चिंतन को गहराई से प्रभावित किया, फिर भी उनके कुछ सिद्धांत आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों एवं मानव अधिकारों की दृष्टि से सीमित एवं विवादास्पद माने जाते हैं।

दास प्रथा का समर्थन

अरस्तु की सबसे अधिक आलोचना दास प्रथा के समर्थन के कारण की जाती है। उन्होंने कुछ व्यक्तियों को स्वभाव से दास माना तथा दास प्रथा को प्राकृतिक व्यवस्था का भाग बताया। आधुनिक युग में स्वतंत्रता एवं मानव समानता को सर्वोच्च मूल्य माना जाता है, इसलिए अरस्तु का यह विचार मानव अधिकारों के विरुद्ध माना जाता है।

महिलाओं के प्रति सीमित दृष्टिकोण

अरस्तु ने महिलाओं को पुरुषों की अपेक्षा कम सक्षम माना तथा उन्हें राजनीतिक एवं सार्वजनिक जीवन में समान स्थान नहीं दिया। आधुनिक लोकतांत्रिक समाज में स्त्री-पुरुष समानता को अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। इस कारण उनके विचारों की आलोचना की जाती है कि उन्होंने महिलाओं के अधिकारों एवं क्षमता को उचित महत्व नहीं दिया।

सीमित नागरिकता की अवधारणा

अरस्तु की नागरिकता संबंधी अवधारणा भी सीमित थी। उन्होंने केवल कुछ विशेष वर्गों को ही नागरिक माना तथा श्रमिकों, किसानों एवं दासों को नागरिक अधिकारों से वंचित रखा। आधुनिक लोकतंत्र में प्रत्येक वयस्क व्यक्ति को समान नागरिक अधिकार प्राप्त होते हैं, इसलिए अरस्तु की यह अवधारणा संकीर्ण मानी जाती है।

आदर्श राज्य की व्यावहारिक कठिनाइयाँ

अरस्तु ने आदर्श राज्य की जो कल्पना प्रस्तुत की, उसे पूर्ण रूप से व्यवहार में लागू करना कठिन माना जाता है। उनका आदर्श राज्य छोटे नगर-राज्यों के लिए अधिक उपयुक्त था, जबकि आधुनिक राष्ट्र विशाल एवं जटिल स्वरूप वाले हैं। इसलिए उनके कुछ सिद्धांत आधुनिक परिस्थितियों में सीमित प्रतीत होते हैं।

समानता संबंधी विचारों की आलोचना

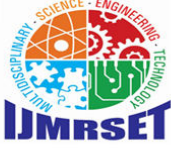
अरस्तु ने समानता को योग्यता एवं सामाजिक स्थिति के आधार पर स्वीकार किया। आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था में सभी व्यक्तियों को समान अधिकार एवं अवसर प्रदान करने पर बल दिया जाता है। इस दृष्टि से उनके विचार पूर्ण सामाजिक समानता की भावना के अनुरूप नहीं माने जाते।

लोकतंत्र के प्रति सीमित समर्थन

अरस्तु ने लोकतंत्र को शासन की एक उपयोगी व्यवस्था माना, किन्तु वे पूर्ण जनसत्ता के पक्ष में नहीं थे। उन्होंने भीड़तंत्र एवं अराजकता की आशंका व्यक्त की। आधुनिक लोकतंत्र जनता की सर्वोच्चता पर आधारित है, इसलिए कुछ विद्वान उनके लोकतंत्र संबंधी विचारों को सीमित मानते हैं।

आधुनिक युग में सीमित प्रासंगिकता

यद्यपि अरस्तु के अनेक विचार आज भी उपयोगी हैं, फिर भी कुछ सिद्धांत आधुनिक औद्योगिक, वैज्ञानिक एवं वैश्विक समाज की जटिल समस्याओं का पूर्ण समाधान प्रस्तुत नहीं करते। आधुनिक राजनीतिक व्यवस्था में मानव अधिकार, वैश्विक सहयोग तथा सामाजिक विविधता जैसे विषय अधिक व्यापक रूप से विकसित हो चुके हैं।



International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

इस प्रकार, अरस्तु के राजनीतिक विचारों में अनेक गुणों के साथ कुछ सीमाएँ एवं कमजोरियाँ भी विद्यमान हैं। फिर भी राजनीति विज्ञान के विकास में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। उनकी आलोचनाओं के बावजूद उनके विचार आधुनिक राजनीतिक चिंतन की आधारशिला के रूप में आज भी अध्ययन एवं चिंतन का विषय बने हुए हैं।

VI. उपसंहार

प्रस्तुत शोध में आधुनिक राजनीतिक चिंतन पर अरस्तु के विचारों के प्रभाव का विस्तृत अध्ययन किया गया है। अरस्तु प्राचीन यूनान के महान दार्शनिक एवं राजनीतिक चिंतक थे, जिन्होंने राजनीति विज्ञान को व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किया। राज्य, नागरिकता, न्याय, कानून, शासन व्यवस्था तथा नैतिक राजनीति संबंधी उनके विचारों ने न केवल प्राचीन राजनीतिक व्यवस्था को प्रभावित किया, बल्कि आधुनिक राजनीतिक चिंतन की दिशा निर्धारित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अरस्तु का मानना था कि राज्य एक प्राकृतिक संस्था है तथा उसका उद्देश्य केवल सुरक्षा प्रदान करना नहीं, बल्कि नागरिकों के नैतिक एवं बौद्धिक विकास को सुनिश्चित करना भी है। उन्होंने कानून की सर्वोच्चता, न्यायपूर्ण शासन, नागरिक उत्तरदायित्व तथा मध्यम वर्ग की महत्ता पर विशेष बल दिया। आधुनिक लोकतांत्रिक एवं संवैधानिक व्यवस्थाओं में इन सिद्धांतों का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

आधुनिक राजनीतिक चिंतन में लोकतंत्र, नागरिक अधिकार, समानता, न्याय तथा जनकल्याणकारी राज्य जैसी अवधारणाओं का विशेष महत्त्व है। इन सभी सिद्धांतों के विकास में अरस्तु के विचारों का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष योगदान रहा है। उन्होंने राजनीति को नैतिकता एवं जनहित से जोड़ते हुए यह स्पष्ट किया कि शासन व्यवस्था का उद्देश्य समाज में शांति, न्याय तथा श्रेष्ठ जीवन की स्थापना करना होना चाहिए। यद्यपि अरस्तु के कुछ विचार, जैसे दास प्रथा का समर्थन तथा महिलाओं के प्रति सीमित दृष्टिकोण, आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों के अनुरूप नहीं माने जाते, फिर भी उनके राजनीतिक सिद्धांतों का महत्त्व कम नहीं होता। उनकी अनेक अवधारणाएँ आज भी लोकतंत्र, कानून आधारित शासन तथा सामाजिक न्याय को समझने में अत्यंत उपयोगी सिद्ध होती हैं।

वर्तमान समय में जब विश्व राजनीतिक अस्थिरता, सामाजिक असमानता तथा नैतिक पतन जैसी समस्याओं का सामना कर रहा है, तब अरस्तु के नैतिक राजनीति एवं जनकल्याण संबंधी विचार अधिक प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। उनके सिद्धांत नागरिक चेतना, उत्तरदायी शासन तथा न्यायपूर्ण समाज की स्थापना के लिए प्रेरणास्रोत हैं।

अतः यह कहा जा सकता है कि अरस्तु के राजनीतिक विचार राजनीति विज्ञान की अमूल्य धरोहर हैं। उनका चिंतन आधुनिक राजनीतिक व्यवस्था की समझ को गहराई प्रदान करता है तथा आज भी राजनीतिक अध्ययन एवं अनुसंधान के क्षेत्र में मार्गदर्शक के रूप में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

संदर्भ सूची

1. सेबाइन, जॉर्ज एच. (2015). *राजनीतिक सिद्धांतों का इतिहास*. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रकाशन.
2. एबेन्स्टीन, विलियम. (2014). *राजनीतिक चिंतन का इतिहास*. जयपुर: राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी.
3. गाबा, ओ. पी. (2018). *राजनीतिक चिंतन*. नई दिल्ली: मयूर पेपरबैक्स.
4. आशीर्वादम, ए. डी. (2011). *राजनीतिक सिद्धांत*. आगरा: साहित्य भवन.
5. महाजन, वी. डी. (2016). *राजनीतिक सिद्धांत*. नई दिल्ली: एस. चाँद प्रकाशन.
6. वर्मा, श्यामलाल. (2013). *आधुनिक राजनीतिक विचारक*. नई दिल्ली: कॉलेज बुक डिपो.
7. रामरतन, एवं प्रसाद, महेश. (2017). *राजनीति विज्ञान के सिद्धांत*. पटना: भारती भवन.
8. कपूर, ए. सी. (2015). *राजनीतिक विज्ञान के सिद्धांत*. लखनऊ: लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन.
9. जौहरी, जे. सी. (2019). *समकालीन राजनीतिक सिद्धांत*. नई दिल्ली: स्टर्लिंग पब्लिशर्स.
10. शर्मा, प्रभुदत्त. (2012). *राजनीतिक विचारों का इतिहास*. जयपुर: पंचशील प्रकाशन.
11. फाड़िया, बी. एल. (2018). *राजनीतिक चिंतन एवं सिद्धांत*. आगरा: साहित्य भवन.
12. राय, एम. पी., एवं जैन, शशि के. (2016). *राजनीति विज्ञान*. नई दिल्ली: अटलांटिक प्रकाशन.
13. कश्यप, सुभाष. (2019). *भारतीय राजनीति एवं संविधान*. नई दिल्ली: राष्ट्रीय पुस्तक न्यास.
14. नारायण, इकबाल. (2014). *राजनीतिक सिद्धांत एवं विचारधाराएँ*. जयपुर: राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी.
15. शर्मा, हरिश्चन्द्र. (2011). *पाश्चात्य राजनीतिक विचारक*. आगरा: साहित्य भवन.



INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA



INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

| Mobile No: +91-6381907438 | Whatsapp: +91-6381907438 | ijmrset@gmail.com |

www.ijmrset.com